# 21वीं सदी में मेरे सपनों का भारत

यद्यपि सपना, सपना होता है तथा यह आवश्यक नही कि वह भविष्य में जाकर साकार हो अर्थात यथार्थ के धरातल पर सत्य सिद्ध हो परन्तु, मै अपना जो सपना देखता हूं वह यथार्थ के ठोस धरातल पर आधारित है। आज भले ही मेरी यह कल्पना है परन्तु भविष्य में काफी कुछ सीमा तक ऐसा ही होगा, ऐसा मेरा दृढ विश्वास है। मेरा सपना विज्ञान के क्षेत्र में तथा कई अन्य क्षेत्रों में स्वर्गीय राजीव गाँधी के सपने से सामंजस्य रखता है।

मैं अपने सपने के भारत को 21वीं सदी के प्रति विभिन्न क्षेत्रों में कुछ यूं देखता हूं -

1 - राजनीति के क्षेत्र में, 2 - आध्यात्मिक, 3 - राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में, 4 - सामाजिक सम्बन्ध तथा समाजवाद के क्षेत्र में, 5 - व्यक्तिगत गुणों तथा प्रगति के क्षेत्र में, 6 - उद्योग उन्नति के क्षेत्र में, 7 - आर्थिक क्षेत्र में, 8- विज्ञान में, 9 - राष्ट्रीय चहुंमुखी विकास तथा उपसंहार।

**1. राजनीति के क्षेत्र में -** 21वीं सदी में भारतीय राजनीति की स्तरता में, वर्तमान में जो गिरावट तथा शिथिलता आ रही है, निश्चय ही वह दूर होगी। घृणित, स्वार्थपरक, कुत्सित तथा कूटनीति से युक्त राजनीति का काफी कुछ सीमा तक अंत हो जायेगा। अपेक्षाकृत बेहतर, निडर, निष्पक्ष, ईमानदार तथा कथनी और करनी में एकत्व रखने वाले व्यक्तियों का आगमन होगा जो देश के विकास तथा प्रगति में सच्चे हृदय एवं दृढ संकल्प से भाग लेंगे। यही नहीं भारतीय राजनीति, जो अंतर्राष्ट्रीय पर्दे से काफी पीछे खिसक चुकी है, पुनः कहीं अधिक वैभव तथा गौरवमय रुप से प्रकट होकर अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर छा जायेगी।

**2. आध्यात्मिक तथा दार्शनिक क्षेत्र में -** परस्पर सहजीविता की भावना अर्थात " जियो और जीने दो" की भावना से लोग रहेंगे तथा इस शाश्वत पुरातन परंपरा को हमेशा कायम रखेंगे। यद्यपि धार्मिक उन्माद अपेक्षाकृत कम हो जायेंगे, साम्प्रदायिकता शिथिल पड़ जायेगी, परन्तु पूर्णतः समाप्त नही होगी। अंधविश्वास, रुढ़िवादी परम्पराओं एवं विचारों में व्यापक परिवर्तन होगा और नवीन स्वस्थ लाभकारी परंपरायें आयेंगी तथा पुरानी त्रुटियों, भूलों को दूर किया जायेगा। साथ ही जातिवाद, भाषावाद, प्रान्तवाद आदि विवादों से हम काफी सीमा तक दूर होंगे क्योंकि समाज में अपेक्षाकृत वृहत जन समुदाय बुद्धिजीवियों का होगा जो कहीं ज्यादा मानवीय दृष्टिकोण से विचारेंगे। हमारा साहित्य भी अधिक समृद्ध, निष्पक्ष, सुदृढ, यथार्थ को प्रकट करने वाला मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत होगा। हम सभी प्रकार के उत्तम साहित्य का निर्माण करेंगे। अन्य साहित्य का स्वागत करेंगे, क्योंकि साहित्य ही भविष्य में हमारे समाज का प्रतिबिम्ब होगा।

**3. राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों के सम्बन्ध में -** अन्य देशों के प्रति भी हमारी नीति जो अब तक अहिंसा, प्रेम, शक्ति कायम रखने की आयी है, इसमें और ज्यादा सुदृढता आयेगी। हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुनः सुदृढ छवि कायम कर पायेंगे। हमारी बात पूरा विश्व सुनेगा ही नही अपितु ध्यान भी देगा, स्वीकार करेगा। एक बार भारत पुनः विश्व गुरु तथा विश्वघोष, पथ-प्रदर्शक बनेगा। राष्ट्रीय स्तर पर भी जन चेतना, राष्ट्रप्रेम की भावना, कर्तव्य के प्रति सचेतनता तथा निष्ठा

---

**मनोज कुमार सागर, "तकनीशियन"**

आयेगी क्योंकि लोग अब की अपेक्षा ज्यादा पढे लिखे होंगे। अधिक खुलेपन का परिचय देंगे। मगर यह खुलापन अश्लीलता या नंगापन नहीं होगा वरन् हमारी वही पुरातन पहचान, सहज सौम्यता, वीरता, धैर्यशीलता, विनयशीलता, सदाचार, संयम, अपरिग्रह, अस्तेय आदि की भावना पर आधारित होगा।

4. **समाज तथा समाजवाद के क्षेत्र में** - प्रत्येक व्यक्ति को निष्पक्ष न्याय मिलेगा और अपराध कम होंगे। पारिवारिक विघटन, तनाव में जरुर गिरावट आयेगी। क्योंकि लोग अधिक साक्षर होंगे, अतः अवश्य ही परिवार नियोजन अपनायेंगे और उसके सुखद परिणाम भी होगें। तब बेरोजगारी की समस्या का आसान हल होगा। योजनायें शीघ्र पूर्ण होगी। सुख-समृद्धि की मात्रा बढेगी साथ ही मातृ प्रेम और अन्योन्यश्रिता की भावना का विकास होगा। जातिवाद की जंजीरे अवश्यमेव कमजोर होंगी परन्तु पूर्णतः समाप्त नहीं होंगी। दहेज प्रथा अवश्य ही काफी सीमा तक समाप्त हो चुकेगी। यही नहीं नारी शिक्षा बढेगी। उनमें जागृति आयेगी और अब की अपेक्षा कहीं ज्यादा कुशलता - सक्षमता से वे विभिन्न क्षेत्रों में अपना डंका बजवायेंगी। प्रत्येक व्यक्ति को रोटी - कपड़ा - मकान की समस्या से शायद कम जूझना पड़ेगा और साथ ही वह राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान कर कार्य करेगा। मै समझता हूं कि तब शायद नग्नता, अश्लीलता में भी काफी कुछ सीमा तक कमी आयेगी। हत्या , अपराध, बाल अपराध, व्यभिचार आदि काफी कम होंगे। समाज परस्पर सम्बद्ध होंगे।

5. **व्यक्तिगत गुणों में वृद्धि तथा प्रगति** - 21वीं सदी में व्यक्ति जब साक्षर तथा अधिक कार्य-कुशल होगा तो अवश्य ही उसके गुणों में वृद्धि तथा दृढता आयेगी। भ्रष्टाचार कम होंगे। ईमानदारी, अहिंसा, प्रेम, त्याग तथा समदृष्टि - समभाव की भावना आयेगी। तब वह जाति बंधन के दायरे शिथिल करेगा। नौजवान अंतर्जातीय विवाह करेंगे। मद्यपान, वेश्यावृत्ति तथा जुआ आदि अवश्य ही कम होंगे क्योंकि तन - मन के स्वस्थ रहने का रहस्य अधिक साक्षर होने के कारण वह जान जायेगा। यही नहीं वह यथा संभव, यथा शक्ति कर्तव्य का पालन करेगा। विघटन को बढावा न देकर एक सुलझे व्यक्ति की भांति समाज को शान्ति, स्थिरता देगा। छात्र हिंसात्मक आन्दोलन करना छोड़ देगें। वे तकनीकी ज्ञान में सफल होने का प्रयास करेंगे। यही नहीं, अन्य वर्ग, समाज, समुदाय भी व्यक्तिगत गुणों की कद्र करेंगे। तब हिंसा तथा आतंकवाद का शायद नामोनिशान न होगा। हम एकता के सूत्र में बंधे होंगे। हम सही अर्थों में शिक्षित तथा भारत माता के नागरिक होंगे।

6. **उद्योग धन्धों के क्षेत्र में** - भारत 21वीं सदी में उद्योग धन्धों के क्षेत्र में अवश्य ही तीव्र प्रगति करेगा यह मेरा सुखद तथा सत्य के अति निकट सपना है। अवश्य ही तब कृषि उत्पादन बढ़ेगा। हम निर्यात अधिक करेंगें। अपने यहां की पूर्ति करने के उपरान्त इसके अलावा अति आवश्यक वस्तुओं का ही आयात करेंगे। औधोगिक उत्पादन में हम अवश्य ही अधिक टिकाऊ, सुन्दर, बेहतर, गुणवत्ता में उच्च कोटि की और विदेशी प्रतिस्पर्द्ध में जो ठहर जाये ऐसी वस्तुऐं निर्मित करेंगे। यह सस्ती भी होंगी और हमारे लिये बेहतर भी। विदेशी मुद्रा भंडारन बढेगा। नयी - नयी फैक्ट्रियां, कल कारखाने खोले जायेंगे। बेरोजगारी दूर होगी। हड़ताल और तालाबन्दी आदि कारण तथा अवधाव कम उत्पन्न होंगे। हमारी उत्पादन दर ही नहीं बढ़ेगी वरन् हमारे प्रत्येक उधोग में अधिक विशिष्टता, नवीनता तथा कुशलता आयेगी।

7. **विज्ञान के क्षेत्र में** - हम विज्ञान में निसंदेह चहुमुखी विकास करेंगे। एक नयी जगह बनायेंगे। हमारे वैज्ञानिक, इंजीनियर, अभियन्तागण तथा चिकित्सक, कृषि, रसायन तथा रक्षा आदि सभी क्षेत्रों में अनुपम विकास करेंगे। जनोपयोगी तथा सुख - समृद्धि में वृद्धि करने वाली वस्तुओं का निर्माण होगा। खोजें होगीं। हम विकास करने के उद्देश्य से ही अनुसंधान करेंगे। विनाश नहीं चाहेंगे। हमारा कृषि के क्षेत्र में अधिक उत्पादन होगा। प्रदूषण कम से कम होगा। पर्यावरण स्वस्थ बना रहे। जनता का शारीरिक-मानसिक विकास होगा। एक वैज्ञानिक भावना, तर्क की भावना आयेगी तथा

रुढ़िवादी विचारों तथा अंधविश्वासों का स्थान लेगी। यही नहीं हमारा पर्यावरण भी सुधरेगा।

**8. आर्थिक क्षेत्र में** - 21वीं सदी में मेरे सपनों का भारत इस क्षेत्र में प्रमुख प्रगति करेगा। शेष विकास और प्रगति इसी सपने के साकार होने पर जबरदस्त निर्भर करती है। पुरातन कहावत "सोने की चिड़िया" कहलाने की तरफ यह निरन्तर अग्रसर होगा और मैं समझता हूं कि जहॉ विदेशी पूंजी विनियोग को प्रोत्साहन मिलेगा, वहीं प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ेगी।

राष्ट्रीय आय में भी वृद्धि होगी। यद्यपि दो वर्ग फिर भी रहेगे - पूंजीपति तथा श्रमिक वर्ग परन्तु मध्यम वर्ग भी रहते हुये अपेक्षाकृत कहीं ज्यादा सुख महसूस करेगा। हां, जन संख्या वृद्धि पर कुछ सीमा तक नियन्त्रण पाने पर अवश्य ही बेरोजगारी में कमी आयेगी, परन्तु यह पूर्णतः समाप्त नहीं होगी। हम पर विदेशी कर्ज कम होगा तथा हमारा भी स्थान विश्व की श्रेष्ठ आर्थिक शक्तियों में गिना जायेगा। गरीबी दूर नहीं तो बहुत कम रह जायेगी। पंचायती राज अधिक विकसित होगा। आर्थिक भ्रष्टाचार पूर्णतः समाप्त तो नहीं होगे किन्तु कम जरुर हो जायेंगे। हमारी योजनायें जो धनाभाव में या तो पूरी नहीं हो पाती या देर से प्रारम्भ होती हैं अथवा देर तक चलती रहती हैं, इन सभी विषम स्थितियों में कमी आयेगी। योजनायें ठीक समय पर बन कर, पूर्ण होकर लाभ देना प्रारम्भ करेंगी। जनता पर कर आरोपण कम तथा हल्का होगा और सुख-सुविधायें अधिक दी जायेंगी। चिकित्सा सुविधा, आवास सुविधा, रोजगार आदि सभी में स्थिति हमारी आर्थिक दृष्टिकोण से सक्षम होगी।

**9. राष्ट्रीय चहूंमुखी विकास तथा उपसंहार** - इस प्रकार मैं जो 21वीं सदी में अपने सपने में भारत को देखता हूं उसमें मैं उसकी सुखद कल्पना अधिक करता हूं। यद्यपि कुछ समस्यायें बनी रहेंगी परन्तु उनमें सुधार तथा संशोधन अवश्य ही आयेगा। जहां हम एक तरफ नैतिक चारित्रिक कर्म से उत्तम कोटि में आयेंगे वहीं कर्म, त्याग, अहिंसा की भावना भी रखेंगे। मैं समझता हूं कि भारत एक त्यागशील शान्तिवादी नीति रखने वाला निरन्तर प्रगति की तरफ अग्रसर रहेगा।

हमारे देश में आज जो भाषावाद, प्रान्तवाद, जातिवाद, अलगाववाद, आरक्षण आदि मसले और मुद्दे चल रहे हैं, धार्मिक उन्माद फैल रहा है इन सब में तब अवश्य ही कमी तो आयेगी क्योंकि जहां समाज में तब भी एक बड़ा वर्ग इन सब रुढिवादी सड़ी-गली मान्यताओं तथा विचारधाराओं का प्रबल समर्थक होगा वही एक समुदाय इनके विरुद्ध होगा जो सत्य को आवाज देगा और सत्य की यह आवाज सदी के मध्योतर तक पहुंचते-पहुंचते ऊंची हो जायेगी। कूप-मंडूपता का स्थान तब कोई नही रहेगा। राष्ट्र में शान्ति विद्यमान हो जायेगी, एकता आयेगी तथा सभी तरह के विवाद समाप्त हो जायेंगे। मनुर्भव की भावना पुनः कायम हो जाने से "जियो और जीने दो" तथा "अहिंसा परम धर्म" की विचार धारा बलवती होगी। लोगों में काफी मात्रा में ईर्ष्या, निन्दा, नफरत, चुगली की भावनायें कम होंगी। तब लोग अधिक व्यस्तता के कारण यद्यपि कर्तव्य के प्रति अधिक जागरुक, उसमें लिप्त होंगे परन्तु साथ ही राष्ट्र और समाज के निर्माण में सृजनात्मक कार्य भी करेंगे। यही नहीं सभी को न्याय मिलेगा। सरकार मात्र सुप्रबन्ध करने की होगी। सभी राज्य पर शासन करेंगे। सभी अधिकारी होंगे, सभी नौकर होंगे। हम न तो किसी को डरायेंगे और न ही किसी से डरेंगे।

हम विज्ञान के सभी क्षेत्रों में अवश्य ही उल्लेखनीय प्रगति करेंगे। आम जनता का स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। उसकी सोच की दिशा निर्माणकारी होगी। सम्पूर्ण राष्ट्र एकता के अटूट सूत्र में बंध जायेगा। हम विश्व के समक्ष एक उदाहरण होंगे आर्थिक सम्पन्नता का, वैयक्तिक गुणों का, क्योंकि हमारे यहॉ सभी को आदर दिया जायेगा और सभी हमारा आदर करेंगे। आम नागरिक, गरीब समझे जाने वाला व्यक्ति भी तब सुख-चैन से दो वक्त की रोटी, अच्छा कपड़ा पहन कर अपने घर के साये में बैठ कर खा सकेगा। तब हम निश्चय ही किसी भी प्रकार से अपने विकास तथा प्रगति में

कोई व्यवधान महसूस नहीं कर पायेंगे।समाज़ में इस सीमा तक जागरुकता, चेतनता ले आयेंगे कि नीचे से ऊपर के स्तर तक का व्यक्ति गलत कार्य करते घबरायेगा। अनेक बार सोचेगा क्योंकि तब हमारे दिलों पर मानवता, दया, प्रेम, देश प्रेम की भावना राज करेगी न कि दानवता, भ्रष्टाचार, असंयम, लालच तथा कुटित्सित वासनायें। इस प्रकार मैं समझता हूं कि 21वीं सदी में मेरे भारत का भविष्य अपेक्षाकृत वर्तमान समय से कहीं उज्जवल होगा - हॉ बुरे क्षेत्रों को छोड़ कर।

**********

## सबसे लंबा सेवाकाल

विश्व में सबसे लंबे सेवाकाल का कीर्तिमान 98 वर्ष का है। यह जापान के शिगेचियों इजुमी ने स्थापित किया था। 29 जून, 1865 को जन्मे इजुमी ने सन् 1872 से एक चीनी मिल में काम करना शुरु किया था। सन 1970 में 105 वर्ष की उम्र में वह रिटायर हुआ। सन् 1982 में उसकी मृत्यु हो गई।

**********

## सबसे बड़ी रसोई

भारत सरकार द्वारा अप्रैल 1973 में अहमदनगर, महाराष्ट्र में स्थापित खुली रसोई इस क्षेत्र में अग्रणी है। यहां 12 लाख अकालपीडितों के लिए निर्वाह लायक भोजन प्रतिदिन पकाया जाता था।

**********

## कलाकार, जो सफलता बर्दाश्त न कर सका

कोरेग्गियों- (1494-1534) दुनिया के महानतम चित्रकारों में से एक - को उसके एक कैनवास के लिए 50 पौण्ड ताम्र मुद्राओं से भरा थैला प्रदान किया गया और वह उसे घर तक लादकर लाने की थकान के कारण मर गया।

**********

## प्रथम परिकलन यंत्र (CALCULATING MACHINE)

सुप्रसिद्ध फ्रान्सीसी गणितज्ञ ब्लेस पास्कल ने 1642 में, जबकि वह एक मुनीम के तौर पर काम कर रहा था, केवल 19 वर्ष की आयु में एक परिकलन यंत्र का आविष्कार किया था।

**********